छोटी माता जानलेवा नहीं - जागरूकता ज़रूरी

मनीष वैद्य

समूचे मालवा और निमाड़ अंचल में इन दिनों छोटी माता (चिकन पॉक्स) बीमारी का प्रकोप बढ़ता जा रहा है। हालांकि यह बीमारी जानलेवा नहीं है, किन्तु पहुंच विहीन गांवों में अशिक्षा व जागरूकता के अभाव या अंधविश्वास के चलते कोई इलाज नहीं कराता। या फिर समय पर समुचित चिकित्सा व्यवस्था उपलब्ध नहीं हो पाती। यही कारण है कि इससे बच्चों की मृत्यु तक हो जाती है। क्षेत्र के झाबुआ, धार, खरगोन आदि ज़िलों में इससे कई बच्चे मारे गए हैं।

प्रायः दिसम्बर के अंतिम सप्ताह से लेकर मार्च के अंतिम सप्ताह तक यह बीमारी होती है। इसे लेकर ग्रामीण अंचलों में कई तरह की भ्रांतियां हैं। कुछ भ्रांतियां या अंधविश्वास तो इतने दुःखद और खतरनाक हैं कि इससे पीड़ित बच्चे की मृत्यु तक हो सकती है। गांव के लोग इसे देवी प्रकोप मानकर छोटी माता के नाम से जानते हैं। विडम्बना ही है कि जहां एक और हम विज्ञान के नित नए आविष्कारों के बारे में देख-सुन रहे हैं वहीं ग्रामीण इस बीमारी से पीड़ित बच्चों का इलाज नहीं कराते।

वे इसके लिए शीतला माता का पूजन करते हैं। उनका मानना है कि इससे माता शांत हो जाती हैं व बीमारी ठीक हो जाती है। पीड़ित बच्चे की दोनों समय आरती करते हैं; बच्चे की मां शीतला माता के ओटले पर जाकर पानी चढ़ाती हैं। कई जगह तो मांएं ज़मीन पर लोटते हुए मंदिर पहुंचती हैं। जहां माता का विधि-विधान से पूजन किया जाता है। गोली दवाई देना पूरी तरह से बंद रहता है। लोगों की मान्यता है कि दवा देने से प्रकोप और बढ़ जाएगा। कुछ गांवों में होली जलाने वाली जगह पर भी पानी चढ़ाया जाता है ताकि माता का प्रकोप शांत हो सके। लगभग पूरे अंचल में छोटी माता निकलने पर झाड़ फूंक व डोरे, गंडे, ताबीज़ का प्रचलन है। इलाज के नाम पर ओझा और पण्डे अच्छी खासी वसूली करते हैं।

आम तौर पर ग्रामीण पीड़ित बच्चों को घर से बाहर नहीं

निकलने देते। गांव की अन्य महिलाओं व शराबी, मांसाहारियों की छाया भी बच्चों पर नहीं पड़ने देते। बच्चों को इस बीच नहलाया भी नहीं जाता। अधिकांश घरों में बच्चे के माता-पिता बघारा खाना नहीं खाते हैं। साथ ही बाटी या ऐसी दूसरी चीज़ें नहीं बनाई जाती हैं जो शीतला माता को पसंद नहीं हैं। कुछ गांव में शीतला माता को धानक से उतारी हुई नीम की डाली या घी भी लाते हैं। नीम की डाली को मुख्य दरवाज़े के कुंदे पर बांधा जाता है और घी बच्चे के शरीर पर लगाया जाता है।

ज़िले में शिक्षा और विकास के मुद्दों पर लंबे समय से काम कर रही एकलव्य संस्था में काम कर चुके संदीप नाईक कहते हैं, "छोटी माता बीमारी में गांव के लोगों की ये भ्रांतियां दुर्भाग्यपूर्ण है। वस्तुतः ठंडाई से रोगी को कुछ देर के लिए आराम मिलता है, इसी कारण गांवों में लोगों ने इसे शीतला माता से जोड़ दिया है। प्रशासन को ऐसी भ्रांतियां दूर करने के लिए अपने अमले का उपयोग करना चाहिए।"

इस रोग के संदर्भ में शिशु रोग विशेषज्ञ मानते हैं कि

यह बीमारी एक वायरस के कारण होती है। देवास के ज़िला चिकित्सालय में वरिष्ठ शिशु रोग विशेषज्ञ डॉ. एस.के. शुक्ला बताते हैं कि इस बीमारी का चक्र लगभग 15 से 21 दिनों का होता है। यह रोग प्रायः 10 साल तक के बच्चों को होता है पर कभी-कभी बड़ों को भी हो जाता है। अत्यधिक संक्रामक होने की वजह से यह बीमारी महामारी का रूप ले लेती है। प्रभावित क्षेत्र के अधिकांश बच्चे इसकी चपेट में आ जाते हैं। अधिकतर मामलों में यह खांसी या छींकते समय निकले हुए थूक के कणों से फैलती है। इसमें बच्चे को पहले तो दाने से निकलते हैं जिन्हें कई बार पित्त के दाने समझ लिया जाता है। अगले दिन और अधिक दाने निकलते हैं। दाने सबसे पहले धड़ पर निकलते हैं फिर पूरे शरीर पर फैल जाते हैं। कई बार तो ये मुंह, गले व नाक के अंदर भी हो जाते हैं। डॉ. शुक्ला बताते हैं कि इस रोग के प्रारंभिक लक्षण हैं - शरीर में दर्द, कंपकंपाहट, उल्टी आना, तेज़ बुखार व शरीर पर लाल दाने उभरना।

इसकी 4 प्रमुख अवस्थाएं होती हैं- पहली 'मेक्यूल' अवस्था में तेज़ बुखार के साथ शरीर पर लाल दाने उभरने लगते हैं। दूसरी अवस्था 'पेप्यूल' में इन दानों में मवाद आने लगता है व बुखार बढ़ जाता है। इस अवस्था में खाने-पीने की इच्छा कम होने से कमज़ोरी बढ़ती जाती है। तीसरी अवस्था 'विज़ाइकल' में दाने लाल हो जाते हैं व खुजली तेज़ हो जाती है। दानों को खुजाने से हालत बिगड़ जाती है व त्वचा सूज जाती है। चौथी अवस्था 'स्केच' कही जाती है। इसमें दानों पर पपड़ी बनना शुरू हो जाती है और धीरे-धीरे ये सूखकर गिर जाते हैं। इनके सूखने के बाद गुलाबी रंग की त्वचा निकल आती है। कुछ समय बाद वह ठीक भी हो जाती है। उचित समय पर चिकित्सीय परामर्श व उपचार के अभाव में निमोनिया का प्रकोप हो सकता है जो कभी-कभी जानलेवा भी साबित होता है।

शिशु रोग विशेषज्ञ डॉ. प्रकाश गर्ग बताते हैं कि इसमें घबराने की कोई बात नहीं है। यह बीमारी उचित उपचार से ठीक हो जाती है। पर यह ध्यान रखने की बात है कि पीड़ित बच्चों के संपर्क में दूसरे बच्चों को नहीं आने दें।

उन्होंने बताया कि पीड़ित बच्चे को संतुलित पौष्टिक आहार देना चाहिए। अधिकांश भोजन द्रव रूप में दिया जाना चाहिए ताकि गले के दानों से परेशानी न हो। पानी भी उबाल व छानकर देना चाहिए। किसी सुयोग्य चिकित्सक से परामर्श लेकर जल्दी से जल्दी उपचार शुरू कर देने से जल्दी राहत मिलती है। रोगी को मच्छरों से बचाने के लिए मच्छरदानी लगाकर सुलाना चाहिए। भोजन में ठण्डा, अधिक तला, अधिक मिर्ची का, मांस, अचार, चटनी, आइसक्रीम, शीतल पेय आदि नहीं देना चाहिए।

होम्योपैथी विशेषज्ञ के अनुसार इस बीमारी से बचने के लिए होम्योपैथी में प्रतिरोधक दवाइयां हैं। होम्योपैथी चिकित्सा अधिकारी डॉ. सुरेशचन्द्र त्रिवेदी ने बताया कि इन दवाइयों की मात्र 4 खुराक देने से बच्चों के शरीर में चिकन पॉक्स बीमारी के प्रति प्रतिरोध क्षमता पैदा हो जाती है जिसके चलते इन बच्चों में बीमारी होने की सम्भावना बहुत कम हो जाती है। होम्योपैथी की मालांट्रिनम 200 व बेरियोलीनम 200 दवाइयां इसके लिए दी जाती हैं।

यह रोग सिर्फ अंधविश्वासों के कारण आज तक जानलेवा बना हुआ है। शासन-प्रशासन के तमाम प्रयासों, दावों व योजनाओं को धता बताते हुए आज भी ग्रामीण क्षेत्रों में इस बीमारी से जुड़े अंधविश्वास जस-के-तस कायम हैं। ज़रूरत है गांव-गांव में लोगों की जागरूकता बढ़ाने की।

* * * * * * * * *(स्रोत फीचर्स)* * * * * * * * *